International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

भारत की प्राचीन साहित्य परम्परा में महर्षि वेदव्यास का योगदान

सीमा मिश्रा
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, बी.आर.ए.बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार

Article Info
Volume 7, Issue 6
Page Number: 212-216
Publication Issue :
November-December-2020
Article History
Accepted : 12 Nov 2020
Published : 20 Nov 2020

ABSTRACT

भारत की प्राचीन साहित्य परम्परा में महर्षि वेदव्यास का योगदान अत्यन्त प्रषंसनीय रहा है। एक ओर उन्होंने वैदिक ग्रंथों का सरल भाष्य उपस्थापित किया, तो दूसरी ओर ज्ञान एवं धर्म से समन्वित अनेक ग्रंथों का प्रणयन कर हमारी अतिप्राचीन साहित्य परंपरा को समृद्ध किया। भारत की प्राचीन सुदीर्घ पाण्डित्य परम्परा में महर्षि व्यास एक ऐसे युग निर्माता महापुरूष के रूप में विश्रुत हुए, जिनका संस्कृत साहित्य चिर ऋृणी रहेगा।

वैदिक काल से लेकर पौराणिक युग तक व्यास नाम का कोई एक ही व्यक्ति इतना दीर्घजीवी हुआ होगा, यह संभव प्रतीत नहीं हो सकता साथ ही यह भी अंतिम रूप से नहीं कहा जा सकता कि समस्त साहित्य में जहाँ जहाँ 'व्यास' शब्द प्रयुक्त हुआ है केवल कपोल कल्पना मात्र है, उस नाम का कोई व्यक्ति हुआ ही नहीं। इस तरह दोनों निर्णय यथार्थ प्रतीत नहीं होते। वेद व्याख्याता एवं वेद वर्गयिता के रूप में महर्षि वेदव्यास प्राचीन भारतीय साहित्य में 'अपान्तरतमा' नाम से प्रतिष्ठित हैं। अहिर्बुधन्य संहिता में महर्षि व्यास को, जिनका नाम अपान्तरतमा था, कपिल एवं हिरण्यगर्भ के समकलीन माना गया है। भगवान् विष्णु की आज्ञा से, इन तीनों पौराणिक व्यक्तियों में, व्यास ने ऋग्यजुस्साम, (त्रयी) कपिल ने साड़ख्यषास्त्र तथा हिरण्यगर्भ ने योगषास्त्र का विभाग किया।[1]

महाभारत के शान्तिपर्व में इसी व्यास नामधारी 'अपान्तरतमा' को भूत, वर्तमान एंव भविष्य का ज्ञाता, सत्यवादी तथा दृढ़व्रती के रूप में चित्रित किया गया है।

''अथ भूयो जगत्स्रश्टा भोः शब्देनानुनादयन्।।
सरस्वतीमुच्चचार तन्न सारस्वतोऽभवत्।
अपान्तरतमा नाम सुतो वासम्भवः प्रभुः ।।
भूतभव्यभविश्यज्ञः सत्यावादी दृढ़व्रतः।
तमुवाच नतं मूर्ध्ना देवानामादिरव्ययः।।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

वेदाख्याने श्रुतिः कार्या त्वचा मतिमतां वरः।
तस्मात् कुरू यथाऽऽज्ञप्तं ममैतद् वचनं मुने।।
तेन भिन्नास्तदा वेदाः मनोः स्वायभ्भुवेऽन्तरे।
ततस्तुतोष भगवान हरिस्तेनास्य कर्मणा।।[2]

अर्थात् तदनन्तर जगत्स्रष्टा श्री हरि ने भोः शब्द से सम्पूर्ण दिषाओं को प्रतिध्वनित करते हुए सरस्वती अर्थात् वार्णा का उच्चारण किया। इससे वहाँ सारस्वत का आविर्भाव हुआ। सरस्वती या वाणी से उत्पन्न हुए उस शक्तिषाली पुत्र का नाम अपान्तरतमा हुआ। वे अपान्तरतमा भूत, वर्तमान तथा भविश्य के ज्ञाता, सत्यवादी तथा दृढ़तापूर्वक व्रत का पालन करने वाले थे। मस्तक झुकाकर खड़े हुए उस पुत्र से देवताओं के आदिकारण अविनाषी श्री हरि ने कहा कि ''हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ मनु! तुम्हे वेदों की व्याख्या के लिए त्रृक्, साम, यजुष् आदि श्रुतियों का पृथक्–पृथक् संग्रह करना चाहिए। अतः तुम मेरी आज्ञा के अनुसार कार्य करो।''

इस तरह हम देखते हैं कि पुराणों से लेकर वैदिक साहित्य तक महर्षि वेदव्यास का एक विराट् व्यक्तित्व सर्वत्र परिव्याप्त है। विभिन्न पुराणों के प्रवचनकर्त्ताओं के रूप में ब्रह्मा जी से लेकर कृष्णद्वैपायन पर्यन्त लगभग 32 व्यासनाम धारी व्यक्ति हुए हैं। इस व्यास परम्परा का अन्तिम व्यास महाभारत के प्रणयनकर्त्ता कृष्णद्वैपायन 'व्यास को माना जाना चाहिए। वायुपुराण[3] तथा ब्रह्मपुराण[4] के अनुसार भारद्वाज, पराशर तथा शक्ति आदि को भी व्यास ही कहा गया है। इस तरह स्पष्ट होता है कि यह व्यास नाम भारतीय साहित्य के अस्तित्व से जुड़ा हुआ है। यह व्यक्तिवाची संज्ञा न होकर एक पदवी या अधिकार के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। जब जो ऋषि–मुनि वेद संहिता का विभाजन या पुराण का संक्षेपण करते, वे ही उस समय व्यास संज्ञक उपाधि से विभूषित हो जाते थे। इस तरह वैदिक साहित्य से लेकर पौराणिक साहित्य किंवा महाभारत नामक ऐतिहासिक ग्रन्थ तक व्यास की साहित्यक रचना–धर्मिता प्रदर्शित हुई है। वेदांत दर्शन के क्षेत्र में लोक विश्रुत शंकराचार्य ने वेदांत–सूत्र का भाष्य करते हुए व्यास के सम्बन्ध में एक नया प्रकाश डाला है। इनके मतानुसार पुराकालीन वेदाचार्य अपान्तरतमा नामक ऋषि ही कलियुग एवं द्वापर युग के सन्धि काल में भगवान् विष्णु की आज्ञा से कृष्ण द्वैपायन के नये रूप में पुनरूद्भूत हुए– ''तथाहि अपान्तरतमा नाम वेदाचार्यः पुराणर्षिः विष्णुर्नियोगात् कलिद्वपरयोः सन्धौ कृष्णद्वैपायनः सम्वभूव। इति स्मरन्ति।''[5]

इन्हीं कृष्णद्वैपायन वेदव्यास का एक नाम वादरायण भी था। यह वादरायण नाम भी एक ऐतिहासिक तथ्य पर आधारित है। हमें विभिन्न ग्रन्थों के प्रामाणिक विवरणों से ज्ञात होता है कि कृष्णद्वैपायन व्यास ने अपने ज्ञान की समस्त उद्भावनाएँ विराट् हिमवन्त की गोद वदरिकाश्रम में बैठकर की थी। अतएव इनका वादरायण नाम वदरिकाश्रम की पवित्र भूमि के चिन्तन् साहचर्य का स्मारक है। महर्षि व्यास प्रणीत वेदांतसूत्र का नाम 'कृष्णद्वैपायन्–सूत्र' अभिहित न होकर 'वादरायण–सूत्र' के नाम से लोक विश्रुत हो गया क्योंकि उसकी रचना इन्होंने वदरिकाश्रम में बैठकर की थी एवं उसी नाम से इनके वेदान्त–सूत्र की अद्यावधि ख्याति है। तैत्तिरीय आरण्यक के अवलोकन से ज्ञात होता है

कि कृष्णद्वैपायन का एक नाम पराशर्य भी था। यह इनके पराशर ऋषि के पुत्र होने के कारण था।[6] अलवेरूनी ने भी व्यास को पराशर का पुत्र कहा है और स्पष्ट किया है कि पैल, वैशम्पायन, जैमिनि एवं सुमन्तु नामक चार शिष्यों ने उनसे क्रमशः ऋग्, यजु, शाम तथा अथर्व का अध्ययन किया था। बौद्ध महाकवि अश्वघोष ने भी कृष्णद्वैपायन व्यास के सम्बन्ध में कुछ नवीन ऐतिहासिक तथ्यों को प्रस्तुत किया है। अपने 'बुद्धचरितम्' महाकाव्य में (जो ईस्वी पूर्व प्रथम शताब्दी की रचना है।) अश्वघोष ने वेदव्यास से सम्बन्धित तीन बातें रखी हैं– पहलीबात तो यह है कि कृष्ण द्वैपायन ने वेदों को पृथक वर्गों में विभाजित किया, दूसरी बात यह है कि मुनि वसिष्ठ एवं मुनिशक्ति इनके पूर्वज थे तथा तीसरी सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे सारस्वत वंशीय थे। इनके कथनानुसार सारस्वत वंशीय व्यास, कृष्णद्वैपायन ने वेद–विभाजन जैसे उस दुष्कर कार्य को किया, जो उनके वंशज मुनि वसिष्ठ तथा मुनि शक्ति भी नहीं कर सकें थे–

''सारस्वतश्चापि जगाद नष्टं वेदं पुनर्यं ददृशुर्न पूर्वे।
व्यासस्तथैनं बहुधा चकार नयं वसिष्ठः कृत्वान्न शक्तिः।।[7]

महाभारत के शांति पर्व में व्यास की निवास भूमि उत्तरापथ हिमालय तथा इनके पाँच शिष्य वैशम्पायन, सुमन्तु, जैमिनि पैल तथा व्यासपुत्र शुकदेव के संबंध मे वर्णन मिलते हैं। यथा–

''वैशम्पायन उवाच –
वेदार्थान् वेत्तुकामस्य धर्मिष्ठस्य तपोनिधेः।
गुरोर्मे ज्ञाननिष्ठस्य हिमवत्पाद आसतः।।
कृत्वाभारतमाख्यानं तपः श्रान्तस्य धीमतः।
शुश्रूषां तत्परा राजन् कृतवन्तो वयं तदा।।
सुमन्तु जैमिनिश्चैव पैलश्चसुदृढ़व्रतः।
अहं चतुर्थः शिष्यो वै शुकोव्यासात्मजस्तथा।।
एभिः परिवृतो व्यासः शिष्यैः प×चभिरूत्तमैः।
शुशुभे हिमवत्पादे भूतैर्भूतपतिर्यथा।।''[8]

कृष्णद्वैपायन का व्यास संज्ञा से अभिहित होकर अठारहों पुराणों तथा महाभारत का प्रणयन करना भी उनके असाधारण प्रतिभा का परिचायक है। ये पुराण ग्रंथ सहसा ही वैदिक गूढ़ रहस्यों को उद्भासित करते हैं तथा जीवनोपयोगी ज्ञान–विज्ञान, ऐतिहासिक तथ्य तथा धार्मिक रहस्यों को सामान्य जन सुलभ बना डालते हैं। ईश्वरीय सृष्टि तथा उसके विनाश पर्यन्त होने वाले समस्त घटनाक्रमों से परिपूर्ण नीति वचनों से समन्वित यह एक ऐसा महासागर है जो हमेशा नवीन रहते हुए अपने गौरवों से परिपूर्ण बना रहता है।

वेदव्यास निषादराज की पुत्री सत्यवती के गर्भ से पराशर मुनि के वीर्य से उत्पन्न हुए। इनका जन्म यमुना नदी के एक द्वीप में होने से ये 'द्वैपायन' नाम से प्रख्यात हुए। इनका शरीर कृष्ण वर्ण था इस कारण 'कृष्ण मुनि' तथा फिर दोनों नामों के संयुक्त अभिधान कृष्णद्वैपायन नाम से ख्यातिलब्ध हुए। कौरवों एवं पाण्डवों के इतिहास से इनका घनिष्ठ संबंध रहा है। ये धृतराष्ट्र, पाण्डु तथा विदुर के जनक थे। इन्होंने तीन वर्षों तक अथक परिश्रम कर महाभारत जैसे महान् ग्रंथ का प्रणयन किया। महाभारत आदिपर्व में लिखा है–

''त्रिभिर्वर्षैः सदोत्थायी कृष्णद्वैपायनो मुनिः।
महाभारतमाख्यानं कृतवानिदमुत्त्मम् ।।[9]

वेदव्यासजी को अंगों और सहित सम्पूर्ण वेद और परमात्मतत्व का ज्ञान स्वतः प्राप्त हो गया, जिसे दूसरे व्रतोपवासनिरत यज्ञ, तप और वेदाध्ययन से भी प्राप्त नहीं कर पाते। ''आवश्यकता पड़ने पर तुम जब भी मुझे स्मरण करोगी'' धरती पर पर्दापण करते ही अचिन्त्य–शक्तिशाली व्यास ने अपनी जननी से कहा–'मैं अवश्य तुम्हारा दर्शन करूँगा।' और वे माता की आज्ञा से तपश्चरण में लग गये। वेदज्ञान का प्रसार तथा वेदज्ञान का आख्यानशैली में पुराणों में प्रतिपादन यह वेदव्यास का अपूर्व कौशल है। वेद संहिता के वे विव्यासकर्ता हैं। समस्त पुराण–उपपुराण उन्हीं की कृतियाँ हैं। ब्रह्मज्ञान का विधायक ''ब्रह्मसूत्र'' बादरायण शास्त्र नाम से प्रसिद्ध है, ब्रह्मसूत्र आदि ग्रन्थ अद्वैत तत्व की प्रतिष्ठा करने वाले हैं।

निष्कर्षतः महाभारत के सभापर्व में महाराज युधिष्ठिर को दिये गये उपदेशों का बड़ा ही विशद् वर्णन मिलता है। उपदेशोपरान्त अपने पुत्र शुकदेव जी को कार्यभार सौंपकर स्वयं कैलाश की ओर शरीर त्याग की इच्छा से प्रस्थान करते है तथा संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि के बाद व्यास ही सर्वश्रेष्ठ कवि हुए हैं। इनके लिखें काव्य 'आर्ष काव्य' के नाम से विख्यात हैं। व्यास जी का उद्देश्य महाभारत लिख कर युद्ध का वर्णन करना नहीं, बलिक इस भौतिक जीवन की निःसारता को दिखाना है। व्यास जी का कहना है कि भले ही कोई पुरूष वेदांग तथा उपनिषदों को जान ले, लेकिन वह कभी विचक्षण नहीं हो सकता क्योंकि यह महाभारत एक ही साथ अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र तथा कामशास्त्र है।

संदर्भ सूची :

1. अहिर्बुध्न्य संहिता – 11/50–60।
2. महाभारत शांतिपर्व – 349/38–42।
3. वायु पुराण – 23–36।
4. ब्रह्म पुराण – 35/1/6–24।
5. वेदांत–सूत्र भाष्य– शंकराचार्य –3/3/32।

6. तैतिरीय आरण्यक – 1/9/35

7. बुद्धचरितम्–अश्वघोष – 1/42

8. महाभारत शांतिपर्व – 349/9–12।

9. महाभारत–आदिपर्व – 66/32।